REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2018

ये दाग दाग उजाला : चौराहे पर सीढ़ियाँ कहानी संग्रह ।

डॉ. मनीषकुमार मिश्रा
सहायक प्राध्यापक , हिन्दी विभाग ,
के.एम.अग्रवाल महाविद्यालय, कल्याण.

प्रस्तावना :

किशोर चौधरी जी का चौराहे पर सीढ़ियाँ कहानी संग्रह हिंदयुग्म प्रकाशन नई दिल्ली से 2012 में प्रकाशित हुआ । 191 पृष्ठों के इस संग्रह में कुल 14 कहानियाँ संकलित हैं । मुझे इन कहानियों को पढ़ते हुए मुक्तिबोध की कवितायें याद आयीं । कहानियों में कविताओं का मजा मिल रहा है । लेकिन वो कठिन काव्य के प्रेत वाली कवितायें । आप चौराहे पर सीढ़ियाँ कहानी पढ़ें और मुक्तिबोध की अंधेरे में कविता लगेगा जैसे कुछ तो है जो दोनों को जोड़ रहा है ।इन कहानियों में मनोवैज्ञानिक जटिलता है सो पढ़ना तो ठीक है लेकिन समझते हुए पढ़ना कठिन और जटिल है । फ़िर भी पढ़ रहा हूँ क्योंकि कठिन,जटिल और जिद्दी चीजों से पुराना इश्क है । वैसे भी ऐसी चीजें मुश्किल से मिलती हैं जिनसे इश्क किया जा सके । विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम का अधिकांश हिस्सा तो बस दिल्लगी करने लायक रह गया है, वहाँ ताजगी का अभाव है । वहाँ का अध्ययन - अध्यापन नौकरी की अनिवार्य शर्त है ।

किशोर जी की कहानियाँ कठिन हैं लेकिन उनकी अभिव्यक्ति कविता सी कोमल । कई कहानियों में कथानक शीशे के टुकड़ों की तरह चूर-चूर है,केन्द्रियता के नाम पे बिखराव है लेकिन भटकाव नहीं है । अंजलि की डायरी, परमिंदर का इंतजार ये सब गढ़ा हुआ नहीं देखा हुआ, सुना हुआ सा लगता है । ये कहानियाँ अपने समय का दस्तावेज़ भी हैं और एक दावतनामा भी, जिसमें सभी पाठक सहर्ष आमंत्रित हैं । मैंने तो यह दावतनामा कबूल किया है और इस आलेख के माध्यम से प्रयास करूँगा कि इसका जायका आप लोगों को पहुंचा सकूँ । रेसपी समझ पाया तो वो भी साझा करूँगा ।

संग्रह की पहली कहानी का शीर्षक है – अंजलि तुम्हारी डायरी से बयान मेल नहीं खाते । इस कहानी के केंद्र में है अशोक सिंह वल्द हनुवंत सिंह की पुत्री अंजलि सिंह की मृत्यु का इन्वेस्टिगेशन जो की एक सुसाइड / आत्महत्या का केस है । पुलिसिया जाँच के केंद्र में पाँच लोग हैं । विनीत श्रीवास्तव,रमा दीवान,मंडल नाथ महंत,बीदा रावत और बादामी ।

विनीत श्रीवास्तव अंजलि का दोस्त है जो बताता है कि अंजलि सुंदर,सलीकेदार,निडर,आधुनिक तरीके से कपड़े पहननेवाली और पढ़ाई में अच्छी लड़की थी । दोनों में दोस्ती थी,मिलना-जुलना था लेकिन माँ के ऐतराज और छोटे कस्बे के लोगों की मानसिकता के चलते सज्जन व्यक्ति की तरह विनीत ने उससे मिलना – जुलना बंद कर दिया था । लेकिन इंवेस्टिगेटिंग आफिसर मीता पुरी को अंजलि की जो डायरी मिली है उसके अनुसार अंजलि विनीत से प्रेम करती है । उसकी बातें उसे अच्छी लगती हैं लेकिन विनीत का उसे छूना अच्छा नहीं लगता । विनीत ने ही अपनी सौगंध दिलाकर अंजलि को पहली बार सिगरेट पिलाई । एक शाम सिगरेट में जाने क्या मिलाकर पिला दिया और फिर अंजलि

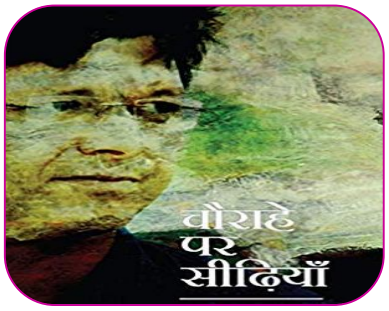

को अपनी वासना का शिकार बनाया । प्यार की बात शरीर पर खत्म हो गयी,अंजलि अपने आप को अपमानित महसूस कर रही थी । वह विनीत को कमीना कहते हुएनफरत के लायक बताती है । निराशा, अवसाद,घृणाऔर अपमान से भरी अंजलि की एब्सर्ड मनः स्थिति का अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि अपनी डायरी में वह पीपल के पत्ते जैसा दिल बनाकर उसके कई टुकड़े करते हुएविनीत लिखकर उसे काटकर वी को नीचे खींच देती है ।

अंजलि और विनीत का रिश्ता शायद प्रेम का नहीं अपितु पसंद का था । अंजलि को अपना अकेलापन काटने के लिए विनीत का सहचर्य, उसकी बातें लुभाती थीं तो विनीत को अंजलि का सुंदर रूप । अंजलि विनीत को लेकर सहज हो रही होगी इसीलिए वो अपने डायरी के माध्यम से कहती भी है कि,“ वो कहता तो मैं कुछ भी करती मगर ------।” शायद विनीत उतने धैर्य और समर्पण के लिए तैयार नहीं था । हो भी नहीं सकता था क्योंकि धैर्य और समर्पण तो प्रेम की पहली शर्त है । विनीत प्रेम में नहीं था इसीलिए वह धोखा भी दे सकता था । प्रेम जैसी उदात्त संकल्पना यहाँ नहीं है ।

दरअसल ये आज की पीढ़ी के बीच से ही सरकती जा रही है । यही कारण है कि रिश्तों की दीवारों को भी दरकने में अब समय नहीं लग रहा । कई बार मैंने लोगों को यह कहते हुएदेखा है कि, “ उससे प्यार करते हो तो शादी कर लो या उनमें प्यार तो था लेकिन उनकी शादी नहीं हो पायी।” प्रेम की मंजिल शादी कैसे हो सकती है ? दोनों का क्या रिश्ता है ? शादी एक पवित्र सामाजिक संस्कार है और प्रेम हर बंधन से मुक्त । प्रेम में बंधन कहाँ है ? किसी को प्रेम करना इबादत सा पवित्र है । प्रेम में प्रार्थना है,मनुहार है ,त्याग है,आत्मसंयम है,निष्ठा है,विश्वास है । प्रेम में जब भी विश्वास की बात आती है तो महाकवि कालिदास के एक श्लोक का सहज स्मरण हो जाता है जिसमें वे बताते हैं कि कैसे वन में एक हिरण – हिरणी एक साथ हैं और हिरण अपनी सींगों से हिरणी की आँख के कोरों को खुजला रहा है ।आप देखिये कि हिरण अपने शरीर के सबसे कठोर हिस्से से हिरणी के शरीर के सबसे नाजुक अंग को छू रहा है लेकिन उनके बीच यह भय नहीं प्रेम और विश्वास व्यक्त करने का सहज प्रयोजन हैं ।

काम भाव प्रेम की अभिव्यक्ति का एक रूप है लेकिन प्रेम के लिए अनिवार्य नहीं । मैं प्रेम की बात करते हुए शरीर को कमतर नहीं आँकना चाहता । यह गलत होगा । परा और अपरा के बीच शरीर ही है जो दोनों के बीच का माध्यम है । ये शरीर ही है जिसे आप भोग का भी माध्यम बना सकते हो और पूजा,तप और संयम का भी । किसी को प्रेम देने,प्रेम पाने और प्रेम में जीने के लिए शरीर आवश्यक है । प्रेम का रास्ता भावों से गुजरता है । सहजता और सरलता ही प्रेम की सघनता को विस्तार देता है । एकाकी और नीरस जीवन की रिक्तता को प्रेम के भाव ही सिक्त करते हैं । अंजलि इन्हीं भावों से सिक्त होते हुएविनीत के कहने पर कुछ भी करने को तैयार थी बशर्ते विनीत अंजलि को समझते हुएउसकी भावनाओं का सम्मान कर पाता ।

विनीत की मानसिकता के माध्यम से लेखक ने आज के हमारे समाज की उस युवा पीढ़ी का चित्र खींचा है जो साधन सम्पन्न परिवारों में पैदा तो हो रहे हैं लेकिन संस्कारों एवं जीवन मूल्यों के मामले में उनसे बड़ा दरिद्र कोई नहीं है । यूज़ अँड थ्रो वाली मानसिकता उनपर हावी है । उपभोक्तावादी मानसिकता ने जीवन से मानवीय पक्षों को धुंधला कर दिया । अंजलि के जीवन के साथ भी लेखक ने बड़ी गंभीर समस्या उठाई है । आज के समय में अकेले होने की समस्या । अवसाद, निराशा,हताशा,कुंठा और नशाखोरी मानों अकेले व्यक्ति का शिकार करने के लिए घात लगाएँ रहते हों । स्त्री विमर्श के इस दौर में जिस स्वतन्त्रता की वकालत की जाती है, वह मेरी समझ के परे है लेकिन इसपर लिखता या बोलता नहीं क्योंकि यह आज के साहित्यिक फैशन के खिलाफ है ।

स्त्री स्वतन्त्रता के संदर्भ में निकट पत्रिका के जुलाई –सितंबर 2014 के अंक 9 से कृष्ण बिहारी जी की संपादकीय का एक टुकड़ा यहाँ प्रस्तुत है –“ जीवन जिस आपाधापी का शिकार हो चुका है उसमें अपनी इच्छा से कोई कबतक किसी को पसंद आएगा ? इसकी क्या गारंटी है कि पसंद आने की अवधि का कभी अंत नहीं होगा ? और, क्या पसंद बदलते ही

दूसरा पुरुष वह स्थान ले लेगा ? और यदि पसंद कारणवश या अकारण ही बदलती रही तो ?यदि यह स्थिति आई तो स्त्री खुद अपने को कहाँ पाएगी ?-----उसकी स्थिति का वर्तमान उसे तोड़ेगा और कुंठाग्रस्त बना देगा ।" अंजलि कुंठित तो नहीं लेकिन एबसर्ड मनःस्थिति तक तो पहुँचही गयी थी और अंत में मृत्युके आलिंगनमें ।

तस्लीमा नसरीन का हंस पत्रिका में एक अनूदित आलेख फ़िदा होते पुरुषों का नरक शीर्षक से जून 2014 के अंक में छपा । तस्लीमा साफ़ लिखती हैं कि," इस समाज में प्रेम करने से अच्छा है सेक्स करना ।" मुझे नहीं लगता कि आज के समाज पर इससे अधिक तल्ख़ टिप्पणी की जा सकती है । मैं शर्मिंदा हूँ कि मैं एक ऐसे समाज का हिस्सा हूँ जहां सेक्स करना प्रेम करने से बेहतर हो जाए । अंजलि भी शर्मिंदा थी और इसीलिए उसने आत्महत्या को जरूरी समझा । हमारे आस-पास न जाने कितने विनीत हैं जो प्रेम में धोखा और धोखे में बलात्कार जैसे अपराध करते हैं तो इस अपराध का शिकार लाखों अंजलि भी हैं जिनके बस नाम बदलते हैं लेकिन उनकी लाशें वैसी ही होती हैं ।

अंजलि की आत्महत्या के मामले में चार अन्य लोगों से भी पूछताछ होती है । रमा दीवान,मंडल नाथ महंत,बीदा रावत और बादामी । रमा दीवान हास्टल में अंजलि की सहेली है जिसके बारे में अंजलि ने डायरी में लिखा," हास्टल में यही एक सही लड़की है बाक़ी साली मुँह में राम बगल में कंडोम लिए घूमती हैं ।" ये शायद वही लड़कियाँ हों जो सेक्स को प्रेम से बेहतर मानती हों या फिर मूल्यों और क़ीमत की लड़ाई में मूल्यों को खो चुकी हों । ये वो लड़कियाँ भी हो सकती हैं जिनके लिए समझौता तरक्की के नए द्वार खोलता हो । ये वो लड़कियाँ भी हो सकती हैं जिनकी कच्ची उम्र में स्वतन्त्रता और स्वच्छंदता के बीच का अंतर समझना मुश्किल रहता है ।

मंडल नाथ महंत वो धूर्त बाबा है जो पहाड़ी पर अकेली अंजलि के साथ बलात्कार की कोशिश करता है पर अंजलि उसे चकमा देकर भागने में सफल होती है । बीदा रावत वो टैक्सी ड्राइवर है जो अंजलि को अपनी बहन समान बताता है लेकिन अंजलि के अनुसार," वह मुझे अपने घर ले गया, शायद वो उसका घर भी नहीं था । उसकी किसी गिरी हुईदोस्त का रहा होगा ।" मंडल नाथ महंत और बीदा रावत इंसान की शक्ल में वे भेड़िये हैं जो धर्म,आस्था और पवित्र रिश्तों के नाम की आड़ में अपनी मानसिक दरिद्रता की खुराक तलाशते रहते हैं । बादामी वो कामवाली बाई है जिसे अंजलि से हमदर्दी रही और अंजलि को बादामी से । बादामी के बारे में अंजलि लिखती है कि," उसके चोट खाये बदन और नोंची गयी छातियों को देखकर मुझे क्रोध हुआ--------मैं तुम्हारी आभारी हूँ कि तुमने मुझे शादी यानी समझौते के बाद के सीन भी अभी दिखा दिये हैं । यानी मेरा आगे भी क्या होगा ....।" बादामी का पति उसे पीटता था ।

अंजलि उदास और अकेली है । सोमेन्द्र उससे शादी भी करना चाहता है लेकिन अंजलि के लिए जिंदगी अब उतनी अपरिचित नहीं है । कोई खयाल उसे ऐसा आता ही नहीं जो ख़ुशी से भर दे । उसे यह बराबर महसूस होता है कि उसका एकाकीपन किसी हारी हुईपलटन के एकाकीपन से भी बड़ा था । इस अंजलि सिंह के माध्यम से कहानीकार आज के समय और समाज के एक ज्वलंत मुद्दे को छेड़ता है बल्कि करोता है ताकि देख सके कि आत्मकेंद्रियता और हवस के लोथड़े के बीच कंही कोई इंसान बचा है ।

इस मार्मिक कहानी के लिए लेखक को बधाई ।

संदर्भ ग्रंथ :

- चौराहे पर सीढ़ियाँ – किशोर चौधरी
- हंस पत्रिका – जून 2014
- निकट पत्रिका – जुलाई-सितंबर 2014,अंक-09

- American Psychiatric Association. (1987). *Diagnostic and Statistical Manual of Mental Disorders* (3rd ed., Revised). Washington, DC: Author.
- Cameron, P. (2005). Child molestations by homosexual foster parents: Illinois, 1997-2002. *Psychological Reports, 96*, 227-230.
- Gonsiorek, J.C. (1982). Results of psychological testing on homosexual populations. *American Behavioral Scientist, 25* (4), 385-396.